दैनिक भास्कर
बीकानेर 08-12-2024

बीकानेर

शुगर और बीपी पीड़ितों के लिए लाभकारी है मशरूम

बीकानेर | स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की।

सारस्वत ने कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। सब्जी मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि श्रीडूंगरगढ़ मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नहीं कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसलें होती हैं। कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम

का उत्पादन शुरू करेगा। उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे।

पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होंने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना से मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। मशरूम उत्पादन के लिए केवल दो ही चीज की आवश्यकता होती है। 22-23 डिग्री तापमान और 80 प्रतिशत आर्द्रता। वक्ताओं ने बताया कि इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है।

मशरूम प्रोटीन से भरपूर, लघु स्तर से ही उत्पादन की कर दें शुरुआत : सारस्वत

एसकेआरयू में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि श्री डूंगरगढ़

मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। कुछ समय पूर्व यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नही कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसल होती है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा। उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे। साथ ही ऐसे प्रतिभागियों को आगामी वर्ष फरवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में भी उनके उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां ज्यादा गर्मी को देखते हुए मटके में मशरूम का उत्पादन भी शुरू किया है। खास बात ये मशरूम उत्पादन को लेकर ज्यादा जगह की जरूरत नहीं पड़ती और बेरोजगार आसानी से इसके जरिए रोजगार पा सकते हैं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री, वीसी के ओएसडी डॉ योगेश शमा ने विचार रखे पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। उन्होने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना ने मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है।

मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है, छोटे स्तर से ही इसके उत्पादन की कर दें शुरुआतः ताराचंद सारस्वत

एसकेआरएयूः मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित

ओम एक्सप्रेस

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक श्री ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की।

श्रीडूंगरगढ़ विधायक श्री ताराचंद सारस्वत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि श्री डूंगरगढ़ मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नहीं कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसल होती है। कोई भी कार्य असंभव नहीं है। उन्होने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों का फसल उत्पादन बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा। उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे। साथ ही ऐसे प्रतिभागियों को आगामी वर्ष फरवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में भी उनके उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां ज्यादा गर्मी को देखते हुए मटके में मशरूम का उत्पादन भी शुरू किया है। खास बात ये मशरूम उत्पादन को लेकर ज्यादा जगह की जरूरत नहीं पड़ती और बेरोजगार आसानी से इसके जरिए रोजगार पा सकते हैं।

वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि किसानों की आय बढ़े और वे समृद्ध बने। अब तक किसान गेहूं, बाजरा इत्यादि की ही खेती करता आया है। मशरूम जैसी नई खेती भी की जाए। इससे किसानों की आय बढ़ेगी। कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर पिछले 37 सालों से किसानों के लिए कार्य कर रहा है।अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश ने कहा कि मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी है। इसमें 40 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इम्यून सिस्टम स्ट्रांग करती है इससे खांसी जुकाम नहीं होते।

वीसी के ओएसडी डॉ योगेश शर्मा ने कहा कि मशरूम मुख्यत अजमेर, जयपुर, कोटा इत्यादि जिलों में होती थी। लेकिन यहां के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां झोंपड़ी में इसका उत्पादन कर नवाचार किया है। जो किसानों की आय बढ़ाने में सहयोग करेगी।इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई। स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना से मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है। डॉ दाताराम ने बताया कि मशरूम उत्पादन के लिए केवल दो ही चीज की आवश्यकता होती है। 22-23 डिग्री तापमान और 80 प्रतिशत आर्द्रता।कार्यक्रम के आखिर में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है, छोटे स्तर से ही इसके उत्पादन की कर दें शुरुआत- ताराचंद सारस्वत, विधायक

हिंदुस्तान से रूबरू

बीकानेर(सुरेश जैन) स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि श्री डूंगरगढ़ मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नही कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसल होती है। कोई भी कार्य असंभव नहीं है। उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों का फसल उत्पादन बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा। उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे। साथ ही ऐसे प्रतिभागियों को आगामी वर्ष फरवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में भी उन्के उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां ज्यादा गर्मी को देखते हुए मटके में मशरूम का उत्पादन भी शुरू किया है। खास बात ये मशरूम उत्पादन को लेकर ज्यादा जगह की जरूरत नहीं पड़ती और बेरोजगार आसानी से इसके जरिए रोजगार पा सकते हैं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि किसानों की आय बढ़े और वे समृद्ध बने। अब तक किसान गेहूं, बाजरा इत्यादि की ही खेती करता आया है। मशरूम जैसी नई खेती भी की जाए। इससे किसानों की आय बढ़ेगी। कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर पिछले 37 सालों से किसानों के लिए कार्य कर रहा है।अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश ने कहा कि मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी है। इसमें 40 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इम्यून सिस्टम स्ट्रांग करती है इससे खांसी जुकाम नहीं होते। वीसी के ओएसडी डॉ योगेश शर्मा ने कहा कि मशरूम मुख्यत अजमेर, जयपुर, कोटा इत्यादि जिलों में होती थी। लेकिन यहां के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां झोंपड़ी में इसका उत्पादन कर नवाचार किया है। जो किसानों की आय बढ़ाने में सहयोग करेगी।इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई। स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना ने मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है। डॉ दाताराम ने बताया कि मशरूम उत्पादन के लिए केवल दो ही चीज की आवश्यकता होती है। 22-23 डिग्री तापमान और 80 प्रतिशत आर्द्रता।कार्यक्रम के आखिर में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विद्यार्थी समेत बड़ी संख्या में प्रतिभागी उपस्थित रहे।

मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर प्रशिक्षण का आगाज

बीकानेर @ पत्रिका. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ। कृषि महाविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। विधायक सारस्वत ने कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरुआत छोटे स्तर से ही

होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि श्रीडूंगरगढ़ मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नही कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसल होती है।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करेगा, उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे। साथ ही ऐसे प्रतिभागियों के आगामी वर्ष फरवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा।

पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विवि की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होने बताया कि पहले मशरूम का बीज हिसार और लुधियाना ने मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है।

पंजाब केसरी
SUN,08 DECEMBER 2024
EDITION: SHRI GANGA NAGAR, PAGE NO. 4

मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है, छोटे स्तर से ही इसके उत्पादन की कर दें शुरुआत : ताराचंद सारस्वत

■ मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित

बीकानेर, 7 दिसंबर (प्रेम) : स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे।

श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें।

शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है, इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा।

शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित करते हुए। (प्रेम)

उन्होंने कहा कि श्री डूंगरगढ़ मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है, यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नही कर सकता था, लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसल होती है।

कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा।

उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे, साथ ही ऐसे प्रतिभागियों को आगामी वर्ष फरवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में भी उनके उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा।

वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि किसानों की आय बढ़े और वे समृद्ध बने। अब तक किसान गेहूं, बाजरा इत्यादि की ही खेती करता आया है। मशरूम जैसी नई खेती भी की जाए, इससे किसानों की आय बढ़ेगी।

कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर पिछले 37 सालों से किसानों के लिए कार्य कर रहा है। अनुसंधान निदेशक डॉ. विजय प्रकाश ने कहा कि मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी है। इसमें 40 प्रतिशत प्रोटीन होता है।

इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इम्यून सिस्टम स्ट्रांग करती है, इससे खांसी जुकाम नहीं होते।

वीसी के ओ.एस.डी. डॉ. योगेश शर्मा ने कहा कि मशरूम मुख्यत अजमेर, जयपुर, कोटा इत्यादि जिलों में होती थी, लेकिन यहां के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां झोंपड़ी में इसका उत्पादन कर नवाचार किया है, जो किसानों की आय बढ़ाने में सहयोग करेगी। इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई।

कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होंने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना ने मंगवाना पड़ता था।

अब एस.के.आर.यू. ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है।

करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है। डॉ दाताराम ने बताया कि मशरूम उत्पादन के लिए केवल दो ही चीज की आवश्यकता होती है। 22-23 डिग्री तापमान और 80 प्रतिशत आर्द्रता।

www.anupgarhjyoti.com Email: Anupgarhjyoti@gmail.com

बेखौफ निष्पक्षता की ओर बढ़ते कदम

दैनिक ई-पेपर

हम वही हैं जो हम बार-बार करते हैं। इसलिए, श्रेष्ठता कोई कार्य नहीं बल्कि एक आदत है। - अरस्तु

अनूपगढ़ ज्योति

RNI No.:63015/95

M. 94144-79189 संपादक : श्रीमती चन्द ओझा, एमजेएमसी

वर्ष : 31 अंक : 110 रविवार, 08 दिसम्बर, 2024 अनूपगढ़ पृष्ठ संख्या: 8

मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है, छोटे स्तर से ही इसके उत्पादन की कर दें शुरुआत : विधायक

मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित

अनूपगढ़ ज्योति न्यूज

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की।

श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि डूंगरगढ़ मूंगफ ली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। यहां कोई मूंगफ ली उत्पादन की कल्पना भी नही कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफ ली, जीरा समेत कई फ सल होती है। कोई भी कार्य असंभव नहीं है। उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों का फ सल उत्पादन बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा। उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे। साथ ही ऐसे प्रतिभागियों को आगामी वर्ष फ रवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में भी उनके उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां ज्यादा गर्मी को देखते हुए मटके में मशरूम का उत्पादन भी शुरू किया है। खास बात ये मशरूम उत्पादन को लेकर ज्यादा जगह की जरूरत नहीं पड़ती और बेरोजगार आसानी से इसके जरिए रोजगार पा सकते हैं।

वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि किसानों की आय बढ़े और वे समृद्ध बने। अब तक किसान गेहूं, बाजरा इत्यादि की ही खेती करता आया है। मशरूम जैसी नई खेती भी की जाए। इससे किसानों की आय बढ़ेगी। कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर पिछले 31 सालों से किसानों के लिए कार्य कर रहा है।अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश ने कहा कि मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी है। इसमें 40 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इम्यून सिस्टम स्ट्रांग करती है इससे खांसी जुकाम नहीं होते।

वीसी के ओएसडी डॉ योगेश शर्मा ने कहा कि मशरूम मुख्यत अजमेर, जयपुर, कोटा इत्यादि जिलों में होती थी। लेकिन यहां के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां झोंपड़ी में इसका उत्पादन कर नवाचार किया है। जो किसानों की आय बढ़ाने में सहयोग करेगी।इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई।

स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना से मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही डींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है। डॉ दाताराम ने बताया कि मशरूम उत्पादन के लिए केवल दो ही चीज की आवश्यकता होती है। 22-23 डिग्री तापमान और 80 प्रतिशत आर्द्रता।कार्यक्रम के आखिर में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विद्यार्थी समेत बड़ी संख्या में प्रतिभागी उपस्थित रहे।

T.I.N
THE INTERNAL NEWS
NETWORK

7 DEC 2024

Inauguration of Seven-Day Training on Mushroom Production and Value Addition Technology at SKRAU, Bikaner

"Mushroom is a highly nutritious, protein-rich food. Start its production even on a small scale and gradually expand," – MLA Shri Tarachand Saraswat

Bikaner : A seven-day training program on "Mushroom Production and Value Addition Technology" commenced on Saturday at Swami Keshwanand Rajasthan Agricultural University (SKRAU), Bikaner. The event, organized by the Department of Plant Pathology's Mushroom Production Unit, Agricultural College, Bikaner, witnessed the participation of Shri Tarachand Saraswat, MLA of Shri Dungargarh, as the chief guest. The event was presided over by Vice Chancellor Dr. Arun Kumar, with Finance Controller Shri Rajendra Kumar Khatri as the special guest.
In his address, Shri Tarachand Saraswat emphasized the immense potential of mushroom production, describing it as a protein-rich food with great market demand. "Farmers and participants should take this opportunity to start mushroom production, even on a small scale. It is a viable option alongside traditional farming to enhance farmers' income. When villages prosper, the nation prospers," he said. Highlighting Shri Dungargarh's transformation into Asia's largest groundnut-producing region, he stated, "What was once unimaginable is now a reality. Groundnut and cumin cultivation thrive here today, proving that no task is impossible. Agricultural universities play a significant role in advancing crop production and research."

Vice Chancellor Dr. Arun Kumar encouraged the participants to take practical steps toward mushroom production after the training. "I will personally visit the homes of those who begin mushroom cultivation to assess their progress. Moreover, participants will have the opportunity to showcase their products at the Farmer Fair scheduled for February next year," he announced. He added that agricultural scientists at SKRAU have innovatively initiated mushroom production using earthen pots to suit Bikaner's extreme temperatures. "Mushroom farming does not require large spaces, making it ideal for unemployed individuals seeking a livelihood."

Finance Controller Shri Rajendra Kumar Khatri echoed the Prime Minister's vision of doubling farmers' income and uplifting their economic status. "Farmers have traditionally focused on crops like wheat and millet, but mushroom farming offers a promising alternative to diversify income sources. SKRAU has been working diligently for farmers for the past 37 years," he noted.

Director of Research Dr. Vijay Prakash highlighted the nutritional benefits of mushrooms. "Mushrooms are purely vegetarian and contain 40% protein. They are rich in antioxidants, which are beneficial for heart, kidney, diabetes, and blood pressure patients. Regular consumption boosts immunity, reducing common illnesses like colds and coughs."

VC's OSD Dr. Yogesh Sharma pointed out that mushroom farming was previously concentrated in districts like Ajmer, Jaipur, and Kota. "However, agricultural scientists at SKRAU have introduced innovative techniques to grow mushrooms in huts, providing new avenues to increase farmers' income," he said.

The program commenced with traditional rituals, including lighting the ceremonial lamp before the statue of Goddess Saraswati. Guests were welcomed with floral bouquets and turbans.

Head of the Plant Pathology Department, Dr. Dataram Kumhar, in his welcome speech, informed that over 60 participants from various districts, including Bikaner, Churu, Sriganganagar, Jodhpur, and Jhunjhunu, are taking part in the training. "This is the fourth training session on mushrooms organized by SKRAU. Previously, mushroom spawn (seeds) had to be procured from Hisar and Ludhiana. Now, SKRAU produces high-quality spawn for oyster, button, and milky mushrooms locally. So far, approximately 250 kg of spawn has been sold," he said.

Dr. Dataram explained that mushroom cultivation requires only two key factors: a temperature of 22-23 degrees Celsius and 80% humidity.

At the conclusion of the program, Dr. P.K. Yadav, Dean of the Agricultural College, delivered the vote of thanks, while Dr. Sushil Kumar conducted the proceedings. The event [illegible] resence of deans, directors, students, and a large number of enthusiastic participants.

This training program marks another significant step by SKRAU toward advancing sustainable agricultural practices and offering innovative solutions to farmers for economic [illegible]

प्रशान्त ज्योति श्रीगंगानगर

एसकेआरएयू- मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित

मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है, छोटे स्तर से ही इसके उत्पादन की कर दें शुरुआत - ताराचंद सारस्वत

प्रशान्त ज्योति न्यूज

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि श्री डूंगरगढ़ मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नहीं कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसल होती है। कोई भी कार्य असंभव नहीं है। उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों का फसल उत्पादन बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा। उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे। साथ ही ऐसे प्रतिभागियों को आगामी वर्ष फरवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में भी उनके उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां ज्यादा गर्मी को देखते हुए मटके में मशरूम का उत्पादन भी शुरू किया है। खास बात ये मशरूम उत्पादन को लेकर ज्यादा जगह की जरूरत नहीं पड़ती और बेरोजगार आसानी से इसके जरिए रोजगार पा सकते हैं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि किसानों की आय बढ़े और वे समृद्ध बने। अब तक किसान गेहूं, बाजरा इत्यादि की ही खेती करता आया है। मशरूम जैसी नई खेती भी की जाए। इससे किसानों की आय बढ़ेगी। कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर पिछले 37 सालों से किसानों के लिए कार्य कर रहा है।अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश ने कहा कि मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी है। इसमें 40 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इम्यून सिस्टम स्ट्रांग करती है इससे खांसी जुकाम नहीं होते।

वीसी के ओएसडी डॉ योगेश शर्मा ने कहा कि मशरूम मुख्यत अजमेर, जयपुर, कोटा इत्यादि जिलों में होती थी। लेकिन यहां के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां झोंपड़ी में इसका उत्पादन कर नवाचार किया है। जो किसानों की आय बढ़ाने में सहयोग करेगी।इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई।

स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होंने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना से मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है। डॉ दाताराम ने बताया कि मशरूम उत्पादन के लिए केवल दो ही चीज की आवश्यकता होती है। 22-23 डिग्री तापमान और 80 प्रतिशत आर्द्रता।कार्यक्रम के आखिर में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विद्यार्थी समेत बड़ी संख्या में प्रतिभागी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री चाहते हैं किसानों की आय बढ़ेः राजेन्द्र खत्री

कृषि विश्वविद्यालय में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम

न्यूज सर्विस/नवज्योति, बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय एसकेआरएयू बीकानेर के वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि किसानों की आय बढ़े उनका यह मिशन मशरूम की खेती से संभव हो सकता है। खत्री शनिवार को विवि परिसर में मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ समारोह के विशिष्ट अतिथि के रूप में अपना संबोधन दे रहे थे। उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर पिछले 37 सालों से किसानों के लिए कार्य कर रहा है। कृषि महाविद्यालय बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विवि कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. विजय प्रकाश, वीसी के ओएसडी डॉ. योगेश शर्मा, पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. दाताराम कुम्हार ने भी विचार रखे। प्रशिक्षण में बीकानेरए चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। मंच संचालन डॉ. सुशील कुमार ने किया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पीके यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मटके में शुरू किया मशरूम का उत्पादन

एसकेआरएयू बीकानेर के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां ज्यादा गर्मी को देखते हुए मटके में मशरूम का उत्पादन भी शुरू किया है। मशरूम में 40 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इम्यून सिस्टम स्ट्रांग करती है इससे खांसी जुकाम नहीं होते। बताया गया कि मशरूम मुख्यत अजमेर, जयपुर, कोटा इत्यादि जिलों में होती थी लेकिन यहां के कृषि वैज्ञानिकों ने बीकानेर में झोंपड़ी में मशरूम का उत्पादन कर नवाचार किया है। जो किसानों की आय बढ़ाने में सहयोग करेगी।

मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है, छोटे स्तर से ही इसके उत्पादन की कर दें शुरूआत : ताराचंद सारस्वत, विधायक

हमारा समाचार

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरूआत छोटे स्तर से ही होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि श्री डूंगरगढ़ मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नही कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसल होती है। कोई भी कार्य असंभव नहीं है। उन्होने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों का फसल उत्पादन बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा। उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे। साथ ही ऐसे प्रतिभागियों को आगामी वर्ष फरवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में भी उनके

उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां ज्यादा गर्मी को देखते हुए मटके में मशरूम का उत्पादन भी शुरू किया है। खास बात ये मशरूम उत्पादन को लेकर ज्यादा जगह की जरूरत नहीं पड़ती और बेरोजगार आसानी से इसके जरिए रोजगार पा सकते हैं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि किसानों की आय बढ़े और वे समृद्ध बने। अब तक किसान गेहूं, बाजरा इत्यादि की ही खेती करता आया है। मशरूम जैसी नई खेती भी की जाए। इससे किसानों की आय बढेगी। कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर पिछले 37 सालों से किसानों के लिए कार्य कर रहा है। अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश ने कहा कि मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी है। इसमें 40 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इम्यून सिस्टम स्ट्रांग करती है इससे खांसी जुकाम नहीं होते। वीसी के ओएसडी डॉ योगेश शर्मा ने कहा कि मशरूम मुख्यत अजमेर, जयपुर, कोटा इत्यादि जिलों में होती थी। लेकिन यहां के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां झोंपड़ी में इसका उत्पादन कर नवाचार किया है। जो किसानों की आय बढ़ाने में सहयोग करेगी इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरूआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई। स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना से मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है। डॉ दाताराम ने बताया कि मशरूम उत्पादन के लिए केवल दो ही चीज की आवश्यकता होती है। 22-23 डिग्री तापमान और 80 प्रतिशत आर्द्रता। कार्यक्रम के आखिर में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विद्यार्थी समेत बड़ी संख्या में प्रतिभागी उपस्थित रहे।

एसकेआरएयू: मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित

मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है, छोटे स्तर से ही इसके उत्पादन की कर दें शुरुआत : ताराचंद सारस्वत

■ लोकमत , बीकानेर

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। डूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा। उन्होंने कहा कि डूंगरगढ़ मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नही कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसल होती है। कोई भी कार्य असंभव नहीं है। उन्होने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों का फसल उत्पादन बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा। उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे। साथ ही ऐसे प्रतिभागियों को आगामी वर्ष फरवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में भी उनके उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां ज्यादा गर्मी को देखते हुए मटके में मशरूम का उत्पादन भी शुरू किया है। खास बात ये मशरूम उत्पादन को लेकर ज्यादा जगह की जरूरत नहीं पड़ती और बेरोजगार आसानी से इसके जरिए रोजगार पा सकते हैं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि किसानों की आय बढ़े और वे समृद्ध बने। अब तक किसान गेहूं, बाजरा इत्यादि की ही खेती करता आया है। मशरूम जैसी नई खेती भी की जाए। इससे किसानों की आय बढ़ेगी। कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर पिछले 37 सालों से किसानों के लिए कार्य कर रहा है।अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश ने कहा कि मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी है। इसमें 40 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इम्यून सिस्टम स्ट्रांग करती है इससे खांसी जुकाम नहीं होते। वीसी के ओएसडी डॉ योगेश शर्मा ने कहा कि मशरूम मुख्यत अजमेर, जयपुर, कोटा इत्यादि जिलों में होती थी। लेकिन यहां के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां झोंपड़ी में इसका उत्पादन कर नवाचार किया है। जो किसानों की आय बढ़ाने में सहयोग करेगी।इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई। स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, गंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना ने मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है। डॉ दाताराम ने बताया कि मशरूम उत्पादन के लिए केवल दो ही चीज की आवश्यकता होती है। 22-23 डिग्री तापमान और 80 प्रतिशत आर्द्रता।कार्यक्रम के आखिर में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विद्यार्थी समेत बड़ी संख्या में प्रतिभागी उपस्थित रहे।

मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है, छोटे स्तर से ही इसके उत्पादन की कर दें शुरुआत : विधायक ताराचंद

» एसकेआरएयू : मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित

सीमा किरण

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन तकनीकी पर सात दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत और विशिष्ट अतिथि वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मशरूम प्रोटीन से भरपूर बहुत बढ़िया चीज है। मार्केट में इसकी खूब डिमांड है। प्रतिभागी इसका उत्पादन शुरू करें। शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है। इसे किसान भाई खेती के साथ साथ भी कर सकते हैं। इससे उनकी आय बढ़ेगी। गांव समृद्ध होंगे तो देश भी समृद्ध होगा।

उन्होंने कहा कि श्री डूंगरगढ़ मूंगफली उत्पादन को लेकर आज एशिया का सबसे बड़ा उत्पादन केंद्र है। यहां कोई मूंगफली उत्पादन की कल्पना भी नही कर सकता था लेकिन आज यहां मूंगफली, जीरा समेत कई फसल होती है। कोई भी कार्य असंभव नहीं है। उन्होने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों का फसल उत्पादन बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग के बाद जो भी प्रतिभागी मशरूम का उत्पादन शुरू करेगा। उसका कार्य वे खुद उनके घर जाकर देखकर आएंगे। साथ ही ऐसे प्रतिभागियों को आगामी वर्ष फरवरी में आयोजित होने वाले किसान मेले में भी उनके उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा। उन्होने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां ज्यादा गर्मी को देखते हुए मटके में मशरूम का उत्पादन भी शुरू किया है। खास बात ये मशरूम उत्पादन को लेकर ज्यादा जगह की जरूरत नहीं पड़ती और बेरोजगार आसानी से इसके जरिए रोजगार पा सकते हैं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री चाहते हैं कि किसानों की आय बढ़े और वे समृद्ध बने। अब तक किसान गेहूं, बाजरा इत्यादि की ही खेती करता आया है। मशरूम जैसी नई खेती भी की जाए। इससे किसानों की आय बढ़ेगी। कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर पिछले 37 सालों से किसानों के लिए कार्य कर रहा है।अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश ने कहा कि मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी है। इसमें 40 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट होते हैं और यह हृदय, किडनी, शुगर, बीपी रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इम्यून सिस्टम स्ट्रांग करती है इससे खांसी जुकाम नहीं होते। वीसी के ओएसडी डॉ योगेश शर्मा ने कहा कि मशरूम मुख्यत अजमेर, जयपुर, कोटा इत्यादि जिलों में होती थी। लेकिन यहां के कृषि वैज्ञानिकों ने यहां झोंपड़ी में इसका उत्पादन कर नवाचार किया है। जो किसानों की आय बढ़ाने में सहयोग करेगी।इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और पुष्प गुच्छ भेंट कर और मां सरस्वती की प्रतिमा के आगे द्वीप प्रज्वलन से हुई। स्वागत भाषण देते हुए पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, जोधपुर, झुंझुनूं समेत विभिन्न जिलों के 60 से ज्यादा प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मशरूम को लेकर यह चौथी ट्रेनिंग है। उन्होने बताया कि पहले मशरूम का बीज (स्पान) हिसार और लुधियाना से मंगवाना पड़ता था। अब एसकेआरयू ही ढींगरी, बटन और मिल्की मशरूम का बीज तैयार करता है। करीब ढाई क्विंटल बीज बेचा जा चुका है। डॉ दाताराम ने बताया कि मशरूम उत्पादन के लिए केवल दो ही चीज की आवश्यकता होती है। 22-23 डिग्री तापमान और 80 प्रतिशत आर्द्रता।कार्यक्रम के आखिर में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया। कार्यक्रम में कृषि विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विद्यार्थी समेत बड़ी संख्या में प्रतिभागी उपस्थित रहे।